eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

हिन्दी की बाल पत्रकारिता का वैशिष्ट्य

सुष्मिता[1], डॉ0 दिग्विजय नरायन[2]
[1]शोधार्थी, इ0 गॉ0 राज0 स्ना0 महाविद्यालय, बांगरमऊ, उन्नाव
[2]शोध निर्देशक (असि0 प्रोफेसर) इ0 गॉ0 राज0 स्ना0 महाविद्यालय, बांगरमऊ, उन्नाव

Received: 20 May 2026 Accepted & Reviewed: 25 May 2026, Published: 31 May 2026

Abstract

मीडिया के व्यापक परिदृश्य में बाल पत्रकारिता का एक अनूठा स्थान है, जो युवा दर्शकों के लिए मनोरंजन और शिक्षा के बीच एक सेतु का काम करता है। हिंदी भाषा में, पत्रकारिता का यह रूप एक जीवंत शैली के रूप में विकसित हुआ है, जो बचपन के अनुभवों को आकार देता है और सांस्कृतिक, नैतिक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देता है। भारत की समृद्ध साहित्यिक परंपरा में निहित, हिंदी बाल पत्रकारिता ने कहानी कहने को शैक्षिक सामग्री के साथ सफलतापूर्वक मिश्रित किया है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि युवा पाठक सूचित और प्रेरित दोनों हों। हिंदी बाल पत्रकारिता की उत्पत्ति 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुई, जो स्थानीय प्रेस के विकास और बाल–केंद्रित साहित्य की आवश्यकता के बारे में बढ़ती जागरूकता के साथ मेल खाती है। चंदामामा और बालक जैसे शुरुआती प्रकाशनों ने एक ऐसी शैली के लिए मंच तैयार किया, जो बच्चों की जिज्ञासा और कल्पना को पूरा करती थी, जिसमें दंतकथाओं, लोककथाओं, कविता, पहेलियों और शैक्षिक लेखों का मिश्रण पेश किया जाता था। इन शुरुआती प्रयासों ने भाषा में सरलता, आकर्षक कथाओं और दृश्य अपील की आवश्यकता को पहचाना, जिससे एक अलग रूप तैयार हुआ जो आसानी से सुलभ और व्यापक रूप से सराहा गया। दशकों से, हिंदी बाल पत्रकारिता ने बदलते समय के साथ खुद को ढाल लिया है। स्वतंत्रता–पूर्व युग में, इसमें अक्सर देशभक्ति की भावना होती थी, जो स्वतंत्रता और राष्ट्रीय गौरव के मूल्यों को सूक्ष्मता से भर देती थी।

मूख्य शब्द– बाल पत्रकारिता, रचनात्मकता, सांस्कृतिक, अध्ययन, बौद्धिक, मनोरंजन।

Introduction

स्वतंत्रता के बाद, युवा पाठकों के बीच रचनात्मकता, वैज्ञानिक सोच और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया। नंदन, चंपक और बाल भारती जैसे प्रकाशन घर–घर में मशहूर हो गए, जो अपने मनोरंजन और सीखने के मिश्रण के लिए जाने जाते थे। आज के डिजिटल युग में, हिंदी बाल पत्रकारिता चुनौतियों और अवसरों दोनों का सामना कर रही है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बदलाव ने इंटरैक्टिव फॉर्मेट पेश किए हैं, लेकिन इसने पारंपरिक प्रिंट पत्रिकाओं के पतन को भी जन्म दिया है। इन परिवर्तनों के बावजूद, इस विधा का मूल सार बच्चों के दिमाग को लुभाने, शिक्षित करने और पोषित करने की इसकी क्षमता बरकरार है। यह अध्याय हिंदी बाल पत्रकारिता के विकास, विशिष्ट विशेषताओं और समकालीन प्रासंगिकता की पड़ताल करता है, न केवल व्यक्तिगत विकास बल्कि सामाजिक मूल्यों को आकार देने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। इसकी यात्रा और रूप को समझकर, हम आधुनिक युग में इसके स्थायी महत्व और नवाचार की क्षमता को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। हिंदी बाल पत्रकारिता का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल सामाजिक मूल्यों को दर्शाता है बल्कि समय के साथ सांस्कृतिक परिवर्तन का दर्पण भी है। अपने शुरुआती दौर में यह शैली पारंपरिक भारतीय कहानी कहने के

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

तरीकों से काफी प्रभावित थी, जैसे पंचतंत्र और जातक कथाओं की दंतकथाएं, नैतिक शिक्षाओं से ओतप्रोत ये शुरुआती कहानियां बच्चों के प्रकाशनों की आधारशिला थीं, जो युवा पाठकों में नैतिक जागरूकता को बढ़ावा देती थीं। जैसे–जैसे साक्षरता दर बढ़ी और शिक्षा प्रणाली का विस्तार हुआ, हिंदी बाल पत्रकारिता में विविध विषयों को शामिल किया जाने लगा। विज्ञान और तकनीक से लेकर पर्यावरण जागरूकता और सामाजिक मुद्दों तक, सामग्री अधिक समावेशी हुई और बच्चों के समग्र विकास को ध्यान में रखा गया। चित्रों, कॉमिक्स और धारावाहिक कहानियों का रचनात्मक उपयोग इस विधा की पहचान बन गया, जिसने इसे मनोरंजक और शिक्षाप्रद दोनों बना दिया। इन पत्रिकाओं ने प्रतियोगिताओं, संपादक को पत्र और कहानी प्रस्तुतियों के माध्यम से पाठकों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया, जिससे युवा पाठकों में समुदाय और अपनेपन की भावना को बढ़ावा मिला। हालाँकि, टेलीविजन, इंटरनेट और स्मार्टफोन के आगमन ने 21वीं सदी में बच्चों की मीडिया उपभोग की आदतों को नाटकीय रूप से बदल दिया है। प्रिंट मीडिया, जो कभी बच्चों की पत्रकारिता का प्राथमिक माध्यम था, अब मल्टीमीडिया सामग्री तक तुरंत पहुँच प्रदान करने वाले डिजिटल प्लेटफॉर्म के साथ प्रतिस्पर्धा करता है। कई पारंपरिक हिंदी बाल पत्रिकाएँ या तो प्रकाशन बंद कर चुकी हैं या प्रासंगिक बने रहने के लिए डिजिटल प्रारूप में स्थानांतरित हो गई हैं।

इस परिवर्तन ने एनिमेटेड स्टोरीटेलिंग, गेमीफाइड लर्निंग और ऑनलाइन फोरम जैसे इंटरएक्टिविटी के नए रास्ते खोले हैं, लेकिन यह भाषा की अखंडता को बनाए रखने और सामग्री की गुणवत्ता सुनिश्चित करने जैसी चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। इन बदलावों के बावजूद, हिंदी बाल पत्रकारिता एक वैश्वीकृत दुनिया में सांस्कृतिक पहचान और भाषाई गौरव को बढ़ावा देने के लिए एक आवश्यक उपकरण बनी हुई है। युवा पाठकों के बीच हिंदी भाषा और साहित्य को बढ़ावा देकर, यह रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को पोषित करते हुए भारत की भाषाई विरासत को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अध्याय हिंदी बाल पत्रकारिता के विकास पर प्रकाश डालता है, इसकी ऐतिहासिक जड़ों, विशिष्ट विशेषताओं और आधुनिक चुनौतियों के साथ इसके अनुकूलन के तरीकों की जांच करता है। यह बच्चों की शिक्षा और सांस्कृतिक विकास पर इसके प्रभाव की भी पड़ताल करता है, और तेजी से डिजिटल होती दुनिया में इस अनूठी शैली को संरक्षित और नया करने के महत्व पर प्रकाश डालता है। हिंदी बाल पत्रकारिता की स्थायी प्रासंगिकता को समझने के लिए, पिछले कुछ वर्षों में भारत को आकार देने वाले सामाजिक–सांस्कृतिक और तकनीकी परिवर्तनों के साथ इसके अंतर्संबंध को समझना महत्वपूर्ण है। इस शैली ने हमेशा मनोरंजन के स्रोत से कहीं अधिक काम किया है। यह एक अनौपचारिक लेकिन शक्तिशाली शैक्षिक मंच रहा है जो औपचारिक स्कूली शिक्षा का पूरक है। अपनी सामग्री के माध्यम से, यह नैतिकता, विज्ञान, इतिहास और यहां तक कि पर्यावरण संरक्षण और लैंगिक समानता जैसे सामाजिक मुद्दों को संबोधित करता है, जो अकादमिक शिक्षा और वास्तविक दुनिया की समझ के बीच की खाई को प्रभावी ढंग से पाटता है। बाल पत्रकारिता का औपचारिक प्रारम्भ भारतेन्दु काल से माना जा सकता है। 1882 में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की विशेष प्रेरणा से 'बाल दपर्ण' पत्रिका का इलाहाबाद से प्रकाशन हुआ। इसके बाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'बाला बोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इन पत्रिकाओं में नैतिक मूल्यों को केन्द्र में रखकार उपदेशात्मक बाल साहित्य प्रकाशित हुआ। इन आरम्भिक बाल पत्रिकाओं के बाद निरन्तर बाल साहित्य की पत्रिकाएँ प्रकाशित होती रहीं। 1891 में लखनऊ से 'बाल हितकर' पत्रिका प्रकाशित हुई। 1906 में अलीगढ़ से 'छात्र हितैषी' पत्रिका प्रकाशित हुई। इसी वर्ष 1906 में ही बनारस से 'बाल प्रभाकर' पत्रिका का प्रकाशन

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

हुआ। 1910 में इलाहाबाद से 'विद्यार्थी' पत्रिका प्रकाशित हुई। 1912 में 'मानीटर' पत्रिका नरसिंहपुर से प्रकाशित हुई। बाल पत्रिकारिता के क्षेत्र में नए युग का प्रारम्भ 'शिशु' पत्रिका से हुआ। १९१४–१५ में 'शिश' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसके संपादक पं0सुदर्शनाचार्य थे। 'शिशु' पत्रिका के प्रकाशन के कुछ समय उपरान्त एक और उत्कृष्ट पत्रिका ने बाल साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण किया। इस पत्रिका ने बाल साहित्य के क्षेत्र में क्रांति ला दी। १९१७ में बंगालियों की प्राइवेट लिमिटेड संस्था 'इंडियन प्रेस' ने 'बालसखा' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसके संपादक पं0बदरीनाथ भट्ट थे। द्विवेदी युग की यह पत्रिका सर्वाधिक लोकप्रिय रही। 'बालसखा' सबसे अधिक समय अर्थात् ५३ वर्ष तक प्रकाशित होती रही। इस पत्रिका ने बाल पाठकों को बहुत प्रभावित किया तथा बाल साहित्यकारों की अच्छी–खासी संख्या तैयार की। इसी प्रकाशन श्रृंखला में १९२० में जबलपुर से 'छात्र सहोदर' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। १९२४ में दिल्ली से माधव जी के संपादन में 'वीर बालक' का प्रकाशन हुआ। पटना से १९२६ में आचार्य रामलोचन शरण के संपादन में 'बालक' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। १९२७ में पं0रामजी लाल शर्मा के संपादन में इलाहाबाद से 'खिलौना' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।

इलाहाबाद से ही 1913 में 'चमचम' का प्रकाशन हुआ। इसके संपादक थे 'विश्व प्रकाश'। १९३१ में एक और पत्रिका इलाहाबाद से प्रकाशित हुई, जो आगे चलकर बाल साहित्य के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुई। यह पत्रिका थी पं0रामनरेश त्रिपाठी के संपादकत्व में प्रकाशित 'वानर' पत्रिका। पं0रामनरेश त्रिपाठी के श्रेष्ठ बालगीत इस पत्रिका के माध्यम से ही बाल पाठकों तक पहुँचकर लोकप्रिय बने। १९३२ में कालाकांकर से कुँवर सुरेश सिंह के संपादन में 'कुमार' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इलाहाबाद से १९३४ में 'अक्षय भैया' का प्रकाशन हुआ। रमाशंकर जैतली के संपादन में मुरादाबाद से १९३६ में 'बाल विनोद' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। १९३८ में पं0राम दहिन मिश्र के संपादन में पटना से 'किशोर' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। १९४४ में प्रेम नारायण टण्डन के संपादन में लखनऊ से 'होनहार' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। १९४६ में व्यथित हृदय से संपादन में इलाहबाद से 'तितली' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। १९४६ में ही इलाहाबाद से ठाकुर श्रीनाथ सिंह के संपादन में 'बालबोध' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले प्रकाशित इन पत्रिकाओं ने बाल पत्रकारिता में अपना स्थान बना लिया था। पत्रिकाओं की संख्या निरन्तर बढ़ती गई। कुछ बन्द हुईं, तो कुछ नई पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती रहीं। इन पत्रिकाओं में कहानी, बालगीत, नैतिक कहानियाँ और हास्य की कहानियाँ प्रमुखता से प्रकाशित होती थीं। लोक जीवन में प्रचलित बाल गीत, बाल कथाएँ आदि भी इन पत्रिकाओं में समय–समय पर प्रकाशित होती रहीं। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व तक बाल साहित्य के प्रकाशन की स्थिति संतोषजनक कही जा सकती है। इस समय तक बाल साहित्य की लगभग तीस मुद्रित पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही थी तथा सोलह हस्तलिखत पत्रिकाएँ प्रकाशित होती थीं। १९४७ में देश स्वतंत्र हुआ। व्यवस्था परिवर्तित हुई। ऐसे में साहित्य के क्षेत्र में भी एक मोड़ आया। बाल साहित्य में देश प्रेम, खुशी और उल्लास से लबालब साहित्य पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगा। भारत सरकार के प्रकाशन विभाग ने स्वतंत्रता प्राप्ति से 'बालभारत' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। यह पत्रिका अद्यतन निरन्तर अत्यन्त लोकप्रिय बनी हुई है। १९४८ में पंजाब से 'प्रकाश' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। १९४९ में दिल्ली से 'अमर कहानी' एवं इलाहाबाद से 'मनमोहन' पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, परन्तु दुर्भाग्य से कुछ अंक निकल कर ये दोनों पत्रिकाएँ काल के गाल में समा गईं। हिन्दी बाल पत्रकारिता के क्षेत्र में इसी समय एक महत्त्वपूर्ण घटना हुई, वह यह कि मद्रास से 'चन्दामामा' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। १९४८

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

में अहिन्दी भाषी क्षेत्र से अपना प्रकाशन प्रारम्भ करने वाली 'चन्दामामा' आज तक निरन्तर प्रकाशित होती चली आई है। यह पत्रिका समूचे देश में अत्यन्त लोकप्रिय है। पटना से 'चुन्नू मुन्नू' पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ और यह भी अपने समय में लोकप्रिय पत्रिका बनी रही। १९५१ में प्रो०लेखराज उल्फत के संपादन में देहरादून से 'नन्हीं दुनिया' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। लखनऊ से एस.एम. शमीम अनहोनवी के संपादन में 'कलियाँ' पत्रिका निकलनी प्रारम्भ हुई। १९५५ में दिल्ली से लक्ष्मी चन्द्र टी. रूप चंदानी के संपादन में 'बाल मित्र' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसी कालावधि में 'वानर' पत्रिका का प्रकाशन जयपुर से प्रारम्भ हुआ।

१९५७ में तरूण भाई के संपादन में 'जीवन शिक्षा' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसी वर्ष दिल्ली से 'स्वतंत्र बालक' का प्रकाशन यत्न प्रकाशशील के संपादन में प्रारम्भ हुआ। ये पत्रिकाएँ बाल पाठकों के बीच अपनी खास पहचान नहीं बना सकीं। १९५८ में दिल्ली से 'पराग' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका ने अति शीघ्र बाल पाठकों एवं बाल साहित्य के पाठकों के बीच अपनी पहचान बना ली। लम्बे समय तक अच्छी प्रसार संख्या होने के बावजूद भी पराग का प्रकाशन बन्द हो गया। लुधियाना से सन्तराम के संपादन में १९५८ में 'शोभा' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। १९५८ में ही उमेश मल्होत्रा के संपादन में जालंधर सिटी से 'नन्हें–मुन्ने' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। वाराणसी से राजकुमार वाही के संपादन में १९५८ में 'राजा बेटा' का प्रकाशन शुरू हुआ। इसी वर्ष मुरादाबाद से शांति प्रसाद दीक्षित के संपादन में 'बालबंधु' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। १९५९ में 'मीनू–टीनू' पत्रिका रमाकान्त पाण्डेय के संपादन में चक्रधर (बिहार) से निकली। दयाशंकर मिश्र 'दद्दा' ने दिल्ली से 'राजा भैया' पत्रिका निकाली। अमृतसर से गुरूचरण सिंह साखी से संपादन में 'बाल फुलवारी' का प्रकाशन हुआ। १९६० में भगवानदास दत्ता के संपादन में करनाल से 'बाल जीवन' का प्रकाशन हुआ। श्रीमती सुमन एवं जे.एन. वर्मा के संपादन में 'हमारा शिशु' पत्रिका निकली। इसी वर्ष भोलानाथ पुरूषोत्तम सरन के संपादन में आजमगढ़ से 'विश्व बाल कल्याण' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। ये पत्रिकाएँ बाल साहित्य के पाठकों में अधिक लोकप्रिय नहीं हुई। बाल पत्रिकाओं के प्रकाशन ही संख्या निरन्तर बढ़ती रही। साथ–ही–साथ अनेकानेक पत्रिकाएँ बन्द भी होती रहीं। कुछ पत्रिकाएँ तो अपने केवल प्रवेशांक ही प्रकाशित कर पायीं। अलीगढ़ से सन २००९ से प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका 'अभिनव बालमन' बच्चों की रचनाओं को प्रमुखता से प्रकाशित करती है. अब तक लगभग शताधिक बाल रचनाये इस पत्रिका में प्रकाशित हुई हैं। २०१२ में नागेश पांडेय संजय के संपादन में गांधी पुस्तकालय, शाहजहांपुर से प्रकाशित 'बाल प्रभा' भी दृष्टि संपन्न बाल पत्रिका है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. देवसरे डा0 हरिकृष्ण, भारती बाल साहित्य, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, 2016, पृ0–187।
2. श्री हरिऔध, बाल कवितावली, शरमन प्रेस, 1939 पृ0–118।
3. जोगी डॉ0 सुनील, हिन्दुस्तानी त्रैमासिक, हिन्दुस्तानी अकादमी इलाहाबाद 2014, पृ0–114।
4. मानावत संजीव, भारत में संचार माध्यम, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ, अकादमी जयपुर, संस्करण 2010, पृ0–19
5. अग्रवाल केदारनाथ, पुष्पदीप नवीनतम कविताओं का संकलन, परिमल प्रकाशन, अल्लापुर इलाहाबाद, संस्करण प्रथम, 1999, पृ0–17
6. प्रसाद जयकिशन, हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियां, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, संस्करण 1975, पृ0–384
7. आजकल नवम्बर 2012, पृ0–48
8. हिन्दुस्तानी त्रैमासिक 2014 पृ0–151